Read & Reflect Initiative

कायाकल्प

लेखक प्रेमचंद

जब मैंने पहली बार कायाकल्प उठाई, तो लगा यह एक पुरानी और कठिन भाषा वाली किताब होगी। लेकिन पढ़ते-पढ़ते समझ आया कि यह आज के समय में भी उतनी ही जरूरी और समझ में आने वाली है। प्रेमचंद ने इसमें बदलाव की बात की है — सिर्फ समाज में नहीं, बल्कि हमारे अंदर भी। किताब का नाम कायाकल्प (यानि बदलाव) आखिर तक पूरी तरह सही लगता है।

मुझे इसमें सबसे अच्छा यह लगा कि इसके किरदार बहुत असली लगते हैं। कुछ लोग स्वार्थी और पुराने विचारों में फंसे हुए हैं, तो कुछ लोग आगे बढ़कर न्याय और प्रगति चाहते हैं। यह टकराव आज की दुनिया से भी मिलता-जुलता है — कुछ लोग सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं, और कुछ लोग बदलाव की कोशिश करते हैं।

किताब सिखाती है कि असली बदलाव बाहर से आने वाले नियमों से नहीं, बल्कि हमारी सोच बदलने से आता है। यह बात बहुत सीधी लेकिन गहरी है।

हाँ, कुछ जगह कहानी धीमी लगती है, लेकिन जिंदगी भी तो धीरे-धीरे बदलती है। आख़िर में पढ़कर उम्मीद महसूस होती है और सोचने पर मजबूर करती है कि क्या मैं खुद और अपने आस-पास कुछ अच्छा बदलाव ला रहा हूँ, या बस समय के साथ बह रहा हूँ।

कुल मिलाकर, कायाकल्प सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि यह याद दिलाने वाली किताब है कि असली बदलाव की शुरुआत खुद से होती है।

अभिनव उनियाल
काउंटर असिस्टेंट (डी.टी.यू सेंट्रल पुस्तकालय)